सुबह का स्वर्गीय मन्ना (1 फरवरी)

यशायाह 30:21 और जब कभी तुम दाहिनी या बाईं ओर मुड़ने लगो, तब तुम्हारे पीछे से यह वचन तुम्हारे कानों में पड़ेगा, "मार्ग यही है, इसी पर चलो"।

यदि हम काँटेदार मार्ग में किसी दो राहे पर आ जाएँ, हमारे अनुभवों में संकट का ऐसा समय आ जाए जब हम नहीं जान पाएँ कि हमें दाहिनी मुड़ना है या बाएँ, तब हमें निश्चय एक बार रुक जाना चाहिए और इस आवाज़ को सुनना चाहिए। (परमेश्वर की आवाज़ को सुनने के लिए कठिन अनुभवों में कोई भी निर्णय लेने से पहले रुक जाएँ ताकि ये आवाज़ सुन पाओ --"मार्ग यही है, इसी पर चलो") दूसरे शब्दों में, हमें परमेश्वर के वचनों कि और मुड़ जाना चाहिए और उनके उपदेशों और सिद्धान्तों पर विचारमग्न होकर, जटिल विषयों पर जो उदाहरण हैं, उनसे सिखने का प्रयत्न करते हुए परमेश्वर की इच्छा सीखनी चाहिए, और परमेश्वर से उनकी पवित्र आत्मा के द्वारा मार्गदर्शन की खोज करनी चाहिए और अपने मन को पूरा प्रयास करके एक प्रेम भरे, समर्पित और भरोसा करने वाली प्रवृति स्थिति में लाना चाहिए। Z.'95-6 R1753:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (2 फरवरी)

रोमियो 8:13 क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे, तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रीयाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे।

शरीर के अनुसार जीने का क्या मतलब है? और हम उत्तर देंगे कि -- इसका मतलब है हमारे गिरे हुए मनुष्य स्वाभाव की लालसाओं और रुचियों के प्रति झुकाव, उनसे तृप्त होना और उनसे सहमति रखना और उन्हीं के पीछे जीने की चाहत रखना। और शरीर की अभिलाषाओं के अनुसार जीना सबसे आसान कार्य है। हमें केवल यही करना है कि निरुत्साही ढंग से बेफिक्र होकर अपने पुराने स्वाभाव में से जो अभी भी मौजूद है, उसके खिलाफ संघर्ष करना ही रोक देना है। जितनी जल्दी हम ऐसा करेंगे, हम बहाव में नीचे तैरते जायेंगें और जाते-जाते पानी का बहाव और भी तीव्र होता जायेगा और पानी का विरोधी प्रभाव ज्यादा से ज्यादा मुश्किल होता जायेगा (कहने का मतलब ये है कि जब हम पानी में नाव चलाते हैं तो यदि बहाव के विपरीत दिशा में बहें तो जल बहुत विरोध करेगा और नाव चलानेवाले को संघर्ष करना पड़ेगा। लेकिन वो जब बहाव के साथ जाता है, तब तेजी से किनारे पहुँचता है)। वैसे ही यदि हम हम अपने गिरे हुए शरीर की फिक्र करते हुए, उसपर ध्यान देते हुए उसकी अभिलाषाओं का विरोध करना चाहेंगे तो ये दौड़ कठिन हो जाएगी। यदि हम अपने शरीर की लालसाओं के प्रति निष्फिक्र होकर बिल्कुल निरुत्साही हो जायेंगे और अपने पुराने स्वाभाव को कोई महत्व ही न देंगे, न ही उससे संघर्ष करें, बल्कि अपनी सारी ऊर्जा परमेश्वर, सच्चाई, उनके उद्देश्यों, उनकी योजना, सच्चाई के भाइयों की सेवा आदि में लगा देंगे तो हम इतने व्यस्त हो जायेंगे कि हमारे पास इस शरीर की अभिलाषाओं के पीछे जाने की इच्छा और समय ही नहीं रहेगा।)
Z.'95-8 R1748:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (3 फरवरी)

नीतिवचन 4:20, 22 हे मेरे पुत्र मेरे वचन ध्यान धरके सुन, और अपना कान मेरी बातों पर लगा। क्योंकि जिनको वे प्राप्त होती हैं, वे उनके जीवित रहने का, और उनके सारे शरीर के चंगे रहने का कारण होती हैं।

दिमाग का शरीर पर प्रभाव को बहुत कम लोग पहचानते हैं। परमेश्वर ने प्राणियों को इस तरह से गठित किया है कि शुद्ध, श्रेष्ठ और पवित्र विचारों का प्रभाव न केवल हमारे मानसिक और नैतिक स्वाभाव की उन्नति करता है और उसे ऊंचा उठाता है बल्कि हमारे शारीरिक गठन पर भी स्फ़ुर्तिदयक असर डालता है। इसके विपरीत, हर एक अशुद्ध, नीच, असभ्य, अपवित्र विचार और क्रियाएँ न केवल हमारे दिमाग और विवेक को दूषित करती है, बल्कि इस गिरी हुई मानवजाति के गठन में जो जो बिमारियों के बीज हैं उन्हें भी पनपने में मदद करती है। Z.'96-180 R2014:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (4 फरवरी)

प्रकाशितवाक्य 18:4 फिर मैं ने स्वर्ग से किसी और का शब्द सुना, कि हे मेरे लोगों, उसमें से निकल आओ; कि तुम उसके पापों में भागी न हो, और उस की विपत्तियों में से कोई तुम पर आ न पड़े।

जो भी परमेश्वर के "मेरे लोगों" बनने के योग्य हैं वे उनकी आवाज़ सुनकर आज्ञापालन करके बेबीलोन से बाहर निकल आएंगे। और इस तरह से उनपर बेबीलोन की कोई विपत्ति नहीं पड़ेगी। क्योंकि जैसे ही उन्हें बेबीलोन की असलियत मालूम होगी, वे तुरन्त वहां से भागकर ये साबित कर देंगें की उनके पापों में (बेबीलोन के पापों में) उनकी (परमेश्वर के लोगों) कोई साझेदारी या भागीदारी नहीं है। जो लोग बेबीलोन के परमेश्वर की निन्दा करने वाले उपदेशों के बारे में अभी की रोशनी के द्वारा जानने के बावजूद भी नहीं निकलते, वे उनके (बेबीलोन के) इस निन्दापूर्वक कार्य में सहभागी होते हैं और बेबीलोन की सारी विपत्तियाँ और भी ज्यादा--मतलब जो (जंगली बीज) का समूह है उन पर आनेवाली विपत्तियाँ से भी ज्यादा विपत्तियाँ फिर इनपर आ जाती है क्योंकि उन्हें ज्यादा रोशनी मिली होती है। Z.'00-3 R2553:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (5 फरवरी)

1 थिस्सलुनीकियों 4:3 क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम पवित्र बनो: अर्थात व्यभिचार से बचे रहो।

जब हम पवित्रशास्त्र में आकर परमेश्वर की इच्छा का पता लगाते हैं, तो ये पाते हैं कि जो महान और बड़ा कार्य परमेश्वर हमसे कराना चाहते हैं, वो दूसरों के लिए करनेवाला कोई कार्य नहीं है, बल्कि हमारे अन्दर करनेवाला कार्य है। हमें खुद को (शरीर और उसकी बुराइयों को) वश में करना है, खुद से जितना है और खुद पर शासन करना है (हमारी नई सृष्टि को इस शरीर का मालिक बनाना है)। इसलिए, बाकि के सारे कार्य - विश्वास के घराने की सेवा के लिए किये गए हमारे कार्य, सभी मनुष्यों की भलाई करने का कार्य और घर या विदेश जाकर किये गए कार्य --> ये सारे कार्य उस महत्वपूर्ण कार्य के दास हैं जो परमेश्वर हमारे अन्दर हमें करने देना

चाहते हैं। इसलिए पौलुस भी हमारी प्रेरणा के लिए 1 कुरिन्थियों 13:2,3 वचनों में लिखते हैं कि हालाँकि हमें सुसमाचार का प्रचार दूसरों को अर्थपूर्ण ढंग से करना है, और हालाँकि हमें अपना सब कुछ कंगालों को खिला देना है या फिर अच्छे कार्य को पूरा करने के लिए शहीद भी बनना है, लेकिन प्रेम के बिना, पिता और मसीह की आत्मा के बिना, जब तक ये सब हमारे जीवन पर शासन करनेवाले सिद्धान्त न बन जाएँ और हमारे अन्दर प्रेम और पिता और मसीह की आत्मा की बढ़ोतरी न हो जाये, दिव्य नज़रिये में हम कुछ भी नही। Z.'99-4 R2412:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (6 फरवरी)

भजन संहिता 75:6,7 क्योंकि बढ़ती न तो पूर्व से न पश्चिम से, और न जंगल की ओर से आती है; परन्तु परमेश्वर ही न्यायी है, वह एक को घटाता और दूसरे को बढ़ाता है।

हमारे पास उपयोग में आये जाने की इच्छाएं और महत्वाकांक्षाएं हो सकती हैं जिन्हें कभी भी बढ़ावा नहीं दिया जायेगा। प्रभु देख सकते हैं कि हम उस पदोन्नति और आदर को सहन नहीं कर सकते जिसको हम खोजते हैं। वह हमसे बेहतर जानते हैं कि हमारे लिए क्या अच्छा है, और इसलिए वे हम से यही चाहते हैं कि, हम उनके प्रावधानों में संतुष्ट रहें, सुस्त नहीं, बल्कि सावधान रहें; लापरवाह नहीं, लेकिन सचेत रहें; उदासीन नहीं, बल्कि परमेश्वर की इच्छा को करने के लिए ज्यादा चाहत रखें, तीव्र इच्छा से भरी हुई; संयम के तहत धीरज रखें, और संतुष्ट रहें, कि भले ही कोई हमें नज़रंदाज़ करे और भूल जाए पर हम ये याद रखें, "वे भी परमेश्वर की सेवा करते हैं जो केवल खड़े होकर इन्तज़ार करते हैं", और यह कि प्रभु अपने स्वयं के

चुने हुए घंटे में हमें अनुग्रह के अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए मार्गदर्शन करेंगे। `Z.'95-11` R1756:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (7 फरवरी)

रोमियों 13:10 प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं करता, इसलिये प्रेम रखना व्यवस्था को पूरा करना है॥

वह जो अपने ह्रदय को इस नई वाचा के व्यवस्था के अनुरूप नहीं पाता है, प्रेम - करुणा, कृपा, सौम्यता, अच्छाई - इस बात की गवाही नहीं दे सकता है कि वह परमेश्वर के वचनों के मुताबिक उनके पुत्र और प्रभु यीशु के साथ साँझा वारिस के रूप में स्वीकार किया जाएगा। यदि हम हमारे ह्रदयों में भाइयों के प्रति प्रेम नहीं रखते, और सभी मनुष्यों के प्रति सौम्यता और दूसरों का भला करने की भावना नहीं रखते, और यहां तक कि गिरी हुई सृष्टि के प्रति भी नहीं रखते, तो हमारे पास वह आत्मा नहीं है जो हमें अभी की परिस्थितियों में बलिदान करने के लिए जरुरी है। यह केवल समय का मामला होगा, जब घमण्ड या व्यर्थ की महिमा की शक्ति, अलग अलग तरीके से, हमें बलिदान के मार्ग में बलिदान करने से रोकेगी, और स्वार्थ हमको पूरे नियंत्रण में ले लेगा। `Z.'98-201` R2330:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (8 फरवरी)

मत्ती 14:31 हे अल्प-विश्वासी, तू ने क्यों सन्देह किया?

विश्वास की इस कमी पर जय पाने के लिए, और विश्वास को बढ़ाने के लिए हमें अवश्य क्या करना चाहिए? इसका उत्तर हम हमारे प्रेरितों से पाते हैं, हमें भी प्रार्थना करनी चाहिए, "प्रभु हमारा विश्वास बढ़ा"। और फिर, इस प्रार्थना के साथ तालमेल रखते हुए, हर एक को अपने हृदय में विश्वास को बढ़ाना चाहिए: (a) परमेश्वर पिता के वचन से परिचित होकर, अपनी यादों को इन दिव्य वादों के साथ लगातार ताज़ा करना चाहिए, (b) परमेश्वर के बच्चे को ज्यादा से ज्यादा ये याद करना चाहिए, की ये वादे उनके हैं, क्योंकि उन्होंने प्रभु के साथ वाचा बाँधी है, और परमेश्वर के बच्चों को अपने हृदय और अपने होठों के साथ, परमेश्वर यहोवा का प्रभु यीशु के द्वारा, प्रार्थना में धन्यवाद करते हुए इन वादों का दावा करना चाहिए। उन्हें अपने विचारों में, और भाइयों के साथ पवित्र बातों पर अपने सभाओं में इन वादों का दावा करना चाहिए। `Z.'00-170` R2642:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (9 फरवरी)

भजन संहिता 116:7 हे मेरे प्राण तू अपने विश्राम स्थान में लौट आ; क्योंकि यहोवा ने तेरा उपकार किया है॥

मसीही की सोचने की आदत उसकी आत्मिक उन्नति या उसके पतन के साथ वास्तव में सम्बन्ध रखती है, क्योंकि यह उसकी आत्मिक स्थिति का चिन्ह भी है; और हमें सोचने की अच्छी आदतों को ध्यान से बढ़ाने की जरुरत है। "सोचने की आदत" से हमारा मतलब, उस सामान्य स्थिति से है, जब हमारा मन मानसिक रूप से आराम के क्षणों में आदत के अनुसार जहाँ लौट जाता है। जीवन के सक्रिय कामों में लगे रहने के दौरान, हमें अपनी मानसिक ऊर्जाओं को उस काम की और मोड़ना है जो हमारे पास है, क्योंकि अगर हम कुछ भी कार्य बुद्धि का उपयोग और उस पर विचार किए बिना करते हैं, हैं तो हम उसे अच्छी तरह से नहीं कर सकते; फिर भी यहाँ पर मसीही सिद्धांत, जो हमारे चरित्र में अच्छी तरह से स्थापित है, अनजाने में हमारा मार्गदर्शन करता है। लेकिन जब कार्य और देखभाल के तनाव को कुछ समय के लिए हटा दिया जाता है, तो ध्रुव को सुई की तरह, सोचने की स्थापित आदत को जल्दी से परमेश्वर में अपने आराम पर वापस लौट जाना चाहिए। `Z.'95-250` R1885:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (10 फरवरी)

1 तीमुथियुस 4:12 पर वचन, और चाल चलन, और प्रेम, और विश्वास, और पवित्रता में विश्वासियों के लिये आदर्श बन जा।

हर एक मसीही को यह प्रयास करना चाहिए की वह एक ऐसा उदाहरण बने जो नकल करने योग्य हो -- हमारे प्रतिदिन के जीवन में प्रभु यीशु मसीह हमारे लिए एक सच्चा आदर्श हैं, और हमें प्रभु यीशु मसीह मसीह की नक़ल करनी है, विश्वास से भरी कोशीश करनी है, और प्रभु यीशु मसीह की सेवा में सक्रिय उत्साह का प्रयास

करना है। वे हमारे लिए पूर्णता का आदर्श हैं, सर्वोत्तम नैतिक महिमा और पवित्रता की सुंदरता हैं, जो की हम अभी के जीवन में होने की उम्मीद नहीं कर सकते। इस तरह का एक आदर्श हमारे पास केवल हमारे प्रभु मसीह के रूप में है। ऐसे किसी भी नज़रिये से प्रेरित पौलुस ने कभी भी नहीं कहा कि, हम उनकी नक़ल करें, या उनका अनुकरण करें; लेकिन उन्होंने कहा है, "तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूं" (1 कुरिन्थियों 11:1) वचन में॥ हमारे प्रेरित पौलुस एक बहुत बड़े उदाहरण थे एक सच्ची कोशीश के, परिपूर्णता को प्राप्त करने में, लेकिन उस परम पूर्णता के नहीं, जो की केवल मसीह में थी; और यह प्रेरित पौलुस की एक सच्ची कोशीश थी मसीह की नक़ल करने की और पौलुस की इसी इच्छा को पूरा करने का प्रयास करने के लिए, हमें भी प्रेरित पौलुस की नकल करनी चाहिए। `Z.'95-251` R1886:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (11 फरवरी)

मत्ती 5:11, 12 धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हरो विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। तब आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहले थे इसी रीति से सताया था॥

परमेश्वर की सेवा के कार्यों का अनिवार्य हिस्सा है विरोध या यातनाएँ या सताया जाना। हमें अपने विरोधियों या सतानेवाले से एक कारण से मिलना है और

स्पष्टवादिता से मिलना है और जब इन विरोध करनेवालों का उद्देश्य पूरा न हो, तब उन्हें औपचारिक तौर से उनके मार्ग में जो खतरा है उसकी चेतावनी देते हुए, जो भी जानभूजकर विरोध करता है उसे उसके मार्ग पर छोड़कर हमें उद्धार का सन्देश लेकर दूसरों की और मुड़ जाना है। हमारे प्रभु यीशु के जीवन में जो विरोध हुए थे और जिस तरीके से वे अपने विरोधियों से मिलते थे, उनका सामना करते थे, हम सभी के लिए जिनकी वैसी ही परीक्षा होगी, ये एक बहुमूल्य पाठ है जो हमें अपने प्रभु यीशु से सीखना है । Z.'94-368 R1736:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (12 फरवरी)

याकूब 1:4 पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ और तुम में किसी बात की घटी न रहे॥

धीरज के अनुग्रह का अभ्यास किये बिना एक कदम भी उन्नति नहीं की जा सकती। और धीरज को छोड़कर कोई भी ऐसा अनुग्रह नहीं है जो मसीह चरित्र की शोभा बढ़ाये या दुनिया के अन्तःकरण से स्वीकृति पाए या सभी अनुग्रहों के परमेश्वर की महिमा करे जिसकी सच्चाई की प्रेरणा ने इस धीरज के अनुग्रह को प्रभावित किया है। यह 'धीरज से लगातार सहने वाली विनम्रता' है जो मन लगाकर मानवी अपरिपूर्णताओं और कमजोरियों के बहाव को काबू में करने का प्रयास कर रही है और बहुत ही सावधानीपूर्वक ध्यान रखकर दिव्य समानता को फिर से पाने की कोशिश कर रही है। ये (धीरज से लगातार सहने वाली विनम्रता) क्रोध में धीमी है और करुणा में प्रचुर है। ये सच्चाई और धार्मिकता के मार्ग को समझने में फुर्तीली

है और उस मार्ग पर तुरन्त चलने के लिए तैयार है। ये अपनी अपरिपूर्णताओं के प्रति सचेत है और दूसरों की अपरिपूर्णताओं और कमियों से सहानुभुति रखती है। Z.'93-295 R3090:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (13 फरवरी)

1 कुरिन्थियों 13:5 प्रेम बुरा नहीं मानता।

जो कोई भी "बुरे - बुरे संदेह" करने के मामले में प्रभु के आदेशों पर ध्यान नहीं देता, वह अपने आप को फंसाने के लिए एक जाल बुनता है, फिर भले ही वह अन्य मामलों में कितनी भी “सावधानीपूर्वक” चलें; क्योंकि ऐसा ह्रदय जो साथी लोगों के प्रति संदेह और शंका से भरा हो, वैसा ह्रदय परमेश्वर पर संदेह करने के लिये आधा से ज्यादा तैयार है: चिड़चिड़ापन और कड़वाहट की आत्मा प्रभु की आत्मा के विरुद्ध है और उसका विरोध करती है, क्योंकि प्रभु की आत्मा प्रेम की आत्मा है। इन दोनों आत्माओं में से कोई एक विजयी होगी। बुराई की गलत आत्मा से हमें छुटकारा पाना है, नहीं तो ये नई सृष्टि को अपवित्र कर देगी और उसे "निकाल देगी"। इसके विपरीत, यदि नई सृष्टि "जयवन्त" होती है पुराने शरीर पर, तो यह इन चीज़ों पर ध्यान देने के द्वारा होगा: यदि हम "बुरे - बुरे संदेह" करने पर जय पा लेते हैं, तो अभी की कठिनाइयों और घेराव के विरुद्ध आधी लड़ाई को जीत लेते हैं। Z.'98-84 R3594:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (14 फरवरी)

मत्ती 12:37 क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा॥

हमारे सभी शब्द प्रभु के द्वारा हमारे हृदय के सूचकांक के रूप में लिए जाते हैं। यदि हमारे शब्द विद्रोह से भरे हुए, या विश्वासघाती, या तुच्छ, या चंचल, या निर्दयी, अकृतज्ञ, अपवित्र या अशुद्ध हों, तो हमारे हृदय को उसी प्रकार से आंका जाता है, इस सिद्धांत पर कि, "जो मन में भरा है, वही मुँह पर आता है"। ...लेकिन अपरिपूर्ण प्राणियों के रूप में हमेशा हमारे शब्द और क्रियाएँ परिपूर्ण हो, ये संभव नहीं है। अपने सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद, हम कभी-कभी शब्द के साथ-साथ क्रियाओं में भी गलती करेंगे, फिर भी हमारे शब्दों और तरीकों की सही श्रेष्ठता को सतर्कता और विश्वासपूर्ण प्रयास से प्राप्त किया जा सकता है। Z.'96-32 R1938:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (15 फरवरी)

1 यूहन्ना 2:5 पर जो कोई उसके वचन पर चले, उस में सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है: हमें इसी से मालूम होता है, कि हम उस में हैं।

आज्ञापालन की परीक्षा है। हम जिस अनुपात में परमेश्वर के वचनों का पालन करेंगें उसी अनुपात में परमेश्वर का प्रेम हममें सिद्ध होगा; क्योंकि यदि हमें मसीह का

मन, पवित्र आत्मा, परमेश्वर की आत्मा मिली है, तब उनके प्रभाव से हम अपनी पूरी क्षमता से परमेश्वर को भाति हुई, परमेश्वर की इच्छा को करने का प्रयत्न करेंगें और साल-दर-साल हमारी इस क्षमता में बढ़ोतरी होनी चाहिए। और यद्दपि जब तक हम 'बदल' न जाएँ और पहले पुनरुथान में 'आत्मिक देह' न पा लें, हम पूरी तरह से परिपूर्ण होने की आशा नहीं कर सकते, लेकिन फिर भी हमें अभी के सारे समय, हमारे मन की आत्मा में अपने प्रभु से लगातार नज़दीक रहते हुए सम्पर्क बनाए रखना है ताकि हम उनके साथ नियमित मेलजोल में बने रहें। Z.'97-312 R2236:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (16 फरवरी)

2 कुरिन्थियों 6:8,3 आदर और निरादर से, दुरनाम और सुनाम से, यद्यपि भरमाने वालों के जैसे मालूम होते हैं तौभी सच्चे हैं। हम किसी बात में ठोकर खाने का कोई भी अवसर नहीं देते, ताकि हमारी सेवा पर कोई दोष न आए।

जब हम अपनी पूरी क्षमता से अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहे होते हैं और प्रगट रूप से हम पर परमेश्वर की आशीषें होती है जो हमारे सभी मामलों में सबसे ज्यादा अंश में चिन्ह छोड़ती है; तब अचानक से मुसीबत आ सकती है, कठिनाई आ सकती है, अन्धकार की शक्ति हम पर विजय पाती लग सकती है और एक क्षण में हम अपने भाइयों के न्याय में दोषी ठहर सकते हैं और हमें ऐसा लग सकता है कि परमेश्वर ने हमें अपने दिव्य संरक्षण में से छोड़ दिया है। बिना किसी संदेह के, ऐसे

अनुभव हमारे लिए जरुरी हैं; ताकि हम ये गा सकें--"मैं रोशनी में परमेश्वर के बगैर अकेले चलने की जगह घोर अन्धकार में परमेश्वर के साथ चलूँगा"। ये गाना एक डिंग मारने के जैसा लग सकता है यदि हम सचमुच में उन अनुभवों से होकर न जाएँ जो हमारे अन्दर ऐसे विश्वास को पैदा कर दे, ऐसे भरोसे को बढ़ा दे, जिसके कारण हम सबसे गहरे अन्धकार वाले घण्टे में भी अपने परमेश्वर का हाथ पकड़ के चलें और उनके दिव्य संरक्षण पर सबसे गहरे अन्धकार में भी भरोसा रखें। Z.'01-314 R2886:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (17 फरवरी)

मत्ती 11:29,30 मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं: और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हल्का है॥

जो प्रभु यीशु मसीह के इस जुए को विश्वास में पहनते हैं, उनके पास परमेश्वर के दिव्य वचन का आश्वासन है, कि सभी चीजें मिलकर उनकी भलाई को ही उत्पन्न करेगी; जितना भारी बोझ इस जुए से जुड़ा होगा, उतनी ही बड़ी आशीष और इनाम दिया जाएगा; वर्तमान समय के दौरान जितने ज्यादा गंभीर हमारे अनुभव होंगे, उतनी ही प्रकाशमय हमारी महिमा होगी, और उतना ही प्रकाशमय हमारा चरित्र होगा, और उतना ही निश्चित होगा कि वे स्वर्गीय राज्य के लिए योग्य हों और तराशें जाएँ। इस दृष्टिकोण से, हर बोझ हल्का है, क्योंकि हमारे जूए की सराहना

की जाती है, और इतना सरल है, इतना उचित है: और इसके अलावा यह इतना हल्का है क्योंकि प्रभु इस जुए में हमारे साथ हैं। Z.'00-137 R2625:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (18 फरवरी)

व्यवस्थाविवरण 13:3 तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारी परीक्षा लेगा, जिस से यह जान ले, कि ये मुझ से अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ प्रेम रखते हैं या नहीं?

परमेश्वर का राज्य केवल उन लोगों के लिए निमित्त है जो परमेश्वर के अनुग्रह से हृदय में प्रभु यीशु की तरह बन रहे हैं, जिसमें वे प्रभु से अपने सारे मन, अपने सारे प्राण, के साथ प्रेम रखें, और यह कहने में योग्य हो सकें, "हे पिता, मेरी इच्छा नहीं, परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो"। परमेश्वर यहोवा के प्रति पूर्ण समर्पण के इलावा और कोई भी शर्त हमें उनके राज्य के लिए ग्रहणयोग्य नहीं बना सकती; क्योंकि कोई दूसरी शर्त, हमारा परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण और उनके प्रति पूर्ण प्रेम का प्रतिनिधितत्व नहीं करती। और हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि सभी स्वर्गीय बातें "जो आंख ने नहीं देखीं, और कान ने नहीं सुनीं, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ीं, वे ही हैं, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिये तैयार की हैं (1 कुरिन्थियों 2:9) वचन। Z.'98-40 R2258:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (19 फरवरी)

तीतुस 1:15,16 शुद्ध लोगों के लिये सब वस्तु शुद्ध हैं, पर अशुद्ध और अविश्वासियों के लिये कुछ भी शुद्ध नहीं: वरन उनकी बुद्धि और विवेक दोनों अशुद्ध हैं। वे कहते हैं, कि हम परमेश्वर को जानते हैं: पर अपने कामों से उसका इन्कार करते हैं, क्योंकि वे घृणित और आज्ञा न मानने वाले हैं: और किसी अच्छे काम के योग्य नहीं॥

यह एक भयानक स्थिति है, और सभी परमेश्वर के लोगों को कितना सावधान रहना चाहिए, न केवल उनके पास शुद्ध हृदय और शुद्ध मन होना चाहिए, बल्कि उनको अपना अन्तःकरण बहुत कोमल और प्रभु के वचन के साथ तालमेल में रखना चाहिए। इस स्थिति को हम केवल खुद को जाँचते हुए बनाये रख सकते हैं , और उसे कड़ाई से और बार-बार, उस स्तर के मुताबिक जिसे परमेश्वर ने हमें दी है यानि उनके प्रेम के कानून के द्वारा खुद को जाँचते हुए हम इस स्थिति को बनाये रख सकते हैं।

"मैं पहले घमंड या अपनी पसंदीदा चाहत को महसूस करना चाहूँगा,

ताकि मेरी भटकती हुई इच्छा को पकड़ सकूँ,

और इस जलती हुई आग को बुझा दूँ"।

Z.'99-214 R2516:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (20 फरवरी)

याकूब 1:26 यदि कोई अपने आप को भक्त समझे और अपनी जीभ पर लगाम न दे पर अपने हृदय को धोखा दे, तो उसकी भक्ति व्यर्थ है।

क्योंकि जीभ हृदय का सूचक है, क्योंकि "जो मन में भरा है, वही मुंह पर आता है," इसलिए वैसी जीभ जिसका खुद पे काबू नहीं है, जो स्वार्थी है, डाह से भरी है, कड़वी बातें, डींग मारती हुई बातें, और निंदापूर्वक बातें बोलती है, वह जीभ यह साबित करती है कि, जिस हृदय से इस तरह की बातें निकलती है, वह हृदय अपवित्र है, अशुद्ध है, और वैसे हृदय में मसीह की आत्मा की गम्भीर रूप से कमी है--इसलिए, वह इस प्रकार से व्यर्थ है, भले ही वह कोई भी धर्म का हो, क्योंकि उसका हृदय न तो बचाया जा सकता है, और न ही एक मुक्तिदायक स्थिति में है...अच्छे वैद्य ने विष से भरे प्राण के लिए एक ऐसी दवा बताई है - जिसको अगर हम ठीक से और निर्देश अनुसार लें, तो वह दवाई हमारे कड़वे हृदय को मीठा कर देगी। Z.'99-215 R2517:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (21 फरवरी)

भजन संहिता 31:3 क्योंकि तू मेरे लिये चट्टान और मेरा गढ़ है; इसलिये अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई कर, और मुझे आगे ले चल।

हमें कुछ सबक और अनुभवों को, जिनमें से थोड़े से सबक और अनुभव शांत और विश्रामपूर्ण परिस्थितयों में हमारे पास आते हैं, देने के बाद, परमेश्वर इन अनुभवों और सबक को देने की प्रक्रिया को बदल सकते हैं, और प्रभु के प्रावधानों के अन्तर्गत परिस्थितियां अनुकूल या प्रतिकूल की ओर जा सकती हैं--जो की हमें नयी परिस्थितयों और नए अवस्थाओं की ओर ले जाती है। इसलिए एक सच्चा आत्मिक इस्राएली, न तो कभी बड़बड़ाएगा, न ही शिकायत करेगा; और यहाँ तक कि, अपनी पसन्द भी सामने नहीं रखेगा; बल्कि मार्गदर्शन के लिए प्रभु की ओर देखेगा। यदि हम दिव्य प्रावधानों की अगुवाई को पहचान पाते हैं, फिर चाहे वे पिछली परिस्थितयों की तुलना में, जिनमें हम थे, अभी की वनवास की अवस्था वाली परिस्थितयों में अधिक अरुचिकर हो, तो हमें बिना किसी सवाल के प्रभु की अगुवाई का अनुकरण, विश्वास और दृढ़ भरोसे के गीतों के साथ करना है। `Z.'02-249` R3060:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (22 फरवरी)

इब्रानियों 13:5 तुम्हारा स्वभाव लोभरिहत हो, और जो तुम्हारे पास है, उसी पर संतोष किया करो…।

स्वार्थी प्राथनाएँ बहुत महेंगी होती हैं। कुछ लोग धन प्राप्त कर लेते हैं और सच्चाई और इसकी सेवा को खो देते हैं; कुछ लोग स्वास्थ प्राप्त कर लेते हैं, केवल ये अनुभव करने के लिए कि स्वास्थ पाने के साथ वे दूसरी अन्य परिक्षाओं में पड़ जाते हैं जो कि पहले से भी ज्यादा कड़ी होती है; कुछ लोगों के प्रियजन मृत्यु के चंगुल से तो बच जाते हैं, लेकिन बाद में वे यही चाहते हैं कि काश परमेश्वर ने उनकी

प्रार्थनाओं का उत्तर न दिया होता--या ज्यादा सही तरीके से कहा जाए तो, वे यही चाहते हैं कि काश उन्होंने परमेश्वर के ज्ञान को स्वीकार कर लिया होता और उनके प्रबन्धों को भरोसेपूर्वक, सन्तुष्टिपूर्वक, बिना किसी शिकायत के स्वीकार कर लिया होता... आत्मिक इस्राएलियों की पहुँच के अन्दर जो वस्तुएँ हैं उन्हें उनका उपयोग बुद्धिमानी से करना चाहिए। सब कुछ को परमेश्वर का तोहफ़ा समझकर धन्यवाद के साथ स्वीकार करना चाहिए। परन्तु उनकी विनतियाँ आत्मिक तोहफों के लिए होनी चाहिए--धीरज से सहना और हृदय की सन्तुष्टि को इस विनती में शामिल करना चाहिए। Z.'02-250 R3061:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (23 फरवरी)

भजन संहिता 32:8 मैं तुझे बुद्धि दूंगा, और जिस मार्ग में तुझे चलना होगा उसमें तेरी अगुवाई करूंगा; मैं तुझ पर कृपा दृष्टि रखूंगा और सम्मत्ति दिया करूंगा।

आत्मिक इस्राएलियों के लिए एक सबसे महत्वपूर्ण पाठ यह है कि वे अपने जीवन के सभी मामलों में मार्गदर्शन के लिए प्रभु को देखें--हमें कोई भी आत्मिक या सांसारिक कार्य करने की चेष्टा, उस कार्य के बारे में परमेश्वर की इच्छा जाने बगैर नहीं करनी है...। हमलोग कनान की और बढ़ रहें हैं और हमें ये जानना जरुरी है कि बहुत से दूसरे अनुभव बाकि हैं जिनसे होकर शीघ्र जाना अनिवार्य है, वादों का वारिस होने के लिए। यहाँ हमारे लिए पाठ यह है कि हमें बिना बड़बड़ाए परमेश्वर के मार्गदर्शन के प्रति फुर्तीला रहना है और पूरी तरह से आज्ञापालन करना है--आनन्दित

रहते हुए। जिन लोगों ने पिछले अनुभवों से मिले पाठों को सीखा है, उन्हीं से ऐसी उम्मीद की जा सकती है कि वे परमेश्वर के मार्गदर्शन के प्रति फुर्तीले हों और आनन्द के साथ पूरी तरह आज्ञापालन करें। इन सबसे ऊपर सबसे महत्वपूर्ण पाठ है विश्वास का पाठ--परमेश्वर की शक्ति और भलाई और विश्वसनीयता पर भरोसा रखना। Z.'02-251,249 R3062:1; 3061:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (24 फरवरी)

रोमियो 8:3,4 क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उसको परमेश्वर ने किया, अर्थात अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी। इसलिये कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।

इन आश्वासनों में क्या आराम और सान्तवना है! ये वचन सचमुच में अदभुत, जीवन के वचन हैं! वे हमें आशा के साथ प्रेरणा देते हैं। यदि परमेश्वर हमारे शरीर की सम्पूर्ण परिपूर्णता की जगह हमारे हृदय के परिपूर्ण इरादों को स्वीकार करेंगें -- तब निश्चय ही हमारे पास परिपूर्णता के उस दिव्य स्तर के चिन्ह तक जिसे परमेश्वर ने हमारे लिए रखा है, उस दिव्य स्तर तक पहुँचने की आशा है...। यद्‍दपि हमारी यह नाशवान देह आत्मिक जरूरतों के मुताबिक नहीं चल सकती, तब भी हम आत्मा के अनुसार चल सकते हैं, आत्मा में चल सकते हैं। हमारा दिमाग, मन -- आत्मा

के चलाए चल सकता है, हमारे इरादे परिपूर्ण हो सकते हैं, और हमारे स्वर्गीय पिता हमारे अन्दर यही देख रहें हैं -- इरादों में परिपूर्णता। Z.'02-248 R3060:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (25 फरवरी)

मत्ती 4:4 यीशु ने उत्तर दिया, कि लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।

हमें यह पाठ सीखना है कि मनुष्य का जीवन जो उसके पास है यानि "भोजन और वस्त्र"; इन वस्तुओं की बहुतायत से ही केवल नहीं बना हुआ है। बल्कि यह कि मनुष्य का जीवन, पूरी तरह से, उचत्तम मायने में, सर्वोच्च अर्थ में उसके परमेश्वर की इच्छा के लिए पूरे समर्पण पर निर्भर करता है। जिन्हें परमेश्वर अपने पुत्र के राज्य में साँझा वारिस होने और अनन्त जीवन पाने के लिए अभी बुला रहे हैं, उनकी उन्नति के लिए ये जरुरी है कि वो -

1) परमेश्वर के मुँह से निकले हर एक वचन के प्रति ध्यान से सावधान रहें।

2) वे हर एक फटकार, हर एक प्रोत्साहन, हर एक वादे को जब जैसे आवश्यकता हो, ध्यान से सचेत होकर सुनें और उनके अनुसार जीवन बिताएँ। इसलिए, प्रभु यीशु के शिष्य होने के नाते, उनकी बातों को आइये हम ज्यादा से ज्यादा याद रखें और मत्ती 4:4 वचन में उन्होंने जो सुझाव दिए हैं उस पर ध्यान करें। Z.'02-246,248 R3058:5; 3060:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (26 फरवरी)

फिलिप्पियों 4:4 प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूं, आनन्दित रहो।

जो प्रभु में आनन्दित रहते हैं वैसे मसीही लोग बहुत ज्यादा नहीं हो सकते, न ही ऐसे लोग ज्यादा आनन्द मना सकते हैं। ये आनन्द न तो धींगामस्ती से भरा है और न ही इसका उल्टा है। प्रभु में आनन्दित रहने का अर्थ यह है कि आत्मा में स्वच्छ्ता, आत्मा में आनन्द, आत्मा में शान्ति, आत्मा में ख़ुशी, हालांकि इसके लिए शोरगुल से भरा दिखावा करना जरुरी नहीं है, जैसा कि गलती से कुछ लोग सोचते हैं। सदा आनन्दित केवल वही लोग रह सकते हैं जो–

--परमेश्वर के बहुत नज़दीक जी रहे हैं,

--जो परमेश्वर के साथ मन की एकता को हमेशा महसूस करते हैं,

--जिनके ऊपर परमेश्वर की सुरक्षा है, जो ये महसूस करते हैं कि उनका ख्याल हमेशा परमेश्वर रख रहे हैं,

--जो हमेशा ये महसूस करते हैं कि परमेश्वर के सारे वादे पक्के हैं, और यह कि

--सभी बातें मिलकर उनकी नई सृष्टि के उच्चतम कल्याण के लिए भलाई ही को उत्पन्न करेगी। Z.'03-7 R3128:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (27 फरवरी)

फिलिप्पियों 4:5 तुम्हारी कोमलता सब मनुष्यों पर प्रगट हो: प्रभु निकट है।

इस वचन में ग्रीक शब्द 'मॉडरेशन' (कोमलता, सब्र, संयम, धैर्य) पेश किया गया है जो कि लगता है 'संयम' का विचार अपने साथ लाता है और ये अर्थ बताता है कि हमें अपने अधिकारों का उपयोग ज्यादा सख्ती से नहीं करना है। जो भी अभिषेक किये गए, प्रभु यीशु के देह के सदस्य बनना चाहते हैं, उनमे निश्चित रूप से ये जरुरी है कि दया और नर्मी का गुण हो। परमेश्वर का न्याय हमसे चाहेगा कि हम हर कार्य में विश्वसनीय हों और दूसरों का न्याय करते समय हमारी सभी जरूरतों में दयावान हों, ताकि हम अपने पिता जो स्वर्ग में हैं उनकी सन्तान ठहरें, क्योंकि वे कृतघ्न (जो लोग धन्यवाद नहीं करते) लोगों पर भी दयालु हैं और करुणामय हैं। Z.'03-7 R3128:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (28 फरवरी)

फिलिप्पियों 4:6 किसी भी बात की चिन्ता मत करो: परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख अपस्थित किए जाएं।

यहाँ पर हमारे मन में एक सवाल उठ सकता है कि क्यों परमेश्वर की नज़र में हमारी जो जरूरतें हैं उन्हें वे जब तक हम याचना या विनती न करें और जब तक

उनके वादों का दावा नहीं करें, वे नहीं देंगें? निःसंदेह, इसलिए की हमें पहले अपने हृदय को सही नज़रिये में तैयार करना होगा ताकि हम परमेश्वर के समर्थन को स्वीकार कर सकें और उनसे लाभ पा सकें। उसी प्रकार यहाँ तक हमें निश्चित होना चाहिए कि अभी तक और अभी हमें जितनी भी दिव्य देखभाल मिल चुकी है और मिल रही है, हम पर्याप्त रूप से उसकी प्रशंशा या कदर नहीं करते हैं। इसलिए, प्रार्थना और धन्यवाद देते समय, शायद हम जो आभार प्रकट करते हैं, उनके सभी कारणों को आधे से ज्यादा मामलों में समझ ही नहीं पाते हैं, लेकिन शीघ्र ही हम उन्हें जानेंगे जैसे कि अब तक जानते आये हैं। Z.'03-8 R3128:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (29 फरवरी)

1 यूहन्ना 4:16 परमेश्वर प्रेम है: जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है; और परमेश्वर उसमें बना रहता है।

न्याय पूरा माप भरता है, लेकिन प्रेम न्याय को हिलाता है, उसे नीचे दबाता है, उसके ऊपर प्रेम का अम्बार लगा देता है और न्याय के ऊपर से प्रेम उमड़ता है। इसलिए प्रेम ऐसा है जिसकी माँग नहीं की जानी चाहिए, न ही प्रेम के कमी की कोई शिकायत करनी चाहिए, बल्कि प्रेम का एक अहसान के रूप में आभार प्रगट किया जाना चाहिए और उदारता से प्रेम के बदले प्रेम का आदान - प्रदान करना चाहिए। हर एक जो इस प्रेम के लिये तरसता है, उसे अपने उच्चतम अर्थों में इसकी लालसा करनी चाहिए - प्रशंसा और श्रद्धा के भाव के साथ। लेकिन इस तरह का प्रेम सबसे महंगा है, और इसे सुरक्षित करने का एकमात्र तरीका चरित्र की श्रेष्ठता

को प्रकट करना है जो उनमें से निकलकर आती है, जो वाकई में श्रेष्ठ हैं। `Z.'02-266` R3071:1 आमीन